P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सामाजिक मानसिकता में बदलाव से ही संभव है स्वच्छ भारत

भारती विजय
शोध छात्रा,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

प्रतिष्ठा पुरोहित
प्राध्यापक,
संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

सारांश

विश्व का पुरातन इतिहास व सभी धर्म व विचार धाराएँ यह मानती रही है कि स्वच्छ वातावरण किसी भी समुदाय या स्थान विशेष के समग्र विकास के लिए अति आवश्यक है। स्वच्छता, स्वास्थ्य और पर्यावरण का चोली दामन का साथ रहा है।

प्राचीनकाल में तो इनमें परस्पर सामंजस्य स्थापित रहता था लेकिन आज हमारे देश की कटु सच्चाई यह भी है कि स्वच्छता व धर्मपरायणता केवल धार्मिक गतिविधियों व रसोई तक ही सीमित है। स्वच्छता के प्रति जागरूकता के अभाव में हमारी 'शस्य श्यामला धरती' पर जगह–जगह कूड़ा–करकट व गन्दगी के ढेर नजर आने लगे है।

स्वच्छता के संदर्भ में सामाजिक भेदभाव व मानवीय सम्मान का प्रश्न सबसे पहले आता है। व्यक्ति के सामाजिक व आर्थिक स्थिति के आधार पर स्वच्छता का स्तर भी अलग–अलग माना जाता है।

युगों से चली आ रही अवैज्ञानिक वर्ण व्यवस्था और जाति आधारित जटिल सामाजिक संरचना ने हमें स्वच्छता के महत्वपूर्ण मुद्दे से अलग कर दिया है... वास्तव में अब समय आ गया है कि हम इस बात को जान और मान लें कि समाज में मात्र एक वर्ग विशेष के ऊपर स्वच्छता का दायित्व नहीं डाला जा सकता। यह कहने से भी काम नहीं चलेगा कि एक वर्ग विशेष का कार्य सफाई करना है और शेष समाज का दायित्व साफ दिखना। यही अमानवीय व्यवस्था और सामंती सोच देश को कहीं का नहीं छोड़ेगी। जाति व्यवस्था पर हमला किए बिना हम एक गरिमापूर्ण समाज और स्वच्छ एवं समृद्ध भारत की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

हमारा एक कदम स्वच्छता के ओर बढ़ाया गया ना केवल आस–पास के माहौल को साफ बनाएगा, बल्कि हम–आपको और पूरे देश को आर्थिक तौर पर भी सबल बनाएगा व विश्व अर्थव्यवस्था में भारत को विशेष स्थान दिलाएगा। बस जरूरत है, सोच बदलने की व सोच को व्यापक बनाने की।

मुख्य शब्द : स्वच्छता, सामाजिक मानसिकता, अमानवीय व्यवस्था, स्वच्छ भारत।

प्रस्तावना

स्वच्छता, स्वास्थ्य और पर्यावरण के बीच एक अटूट रिश्ता माना गया है, अर्थात् उक्त तीनों घटकों के बीच सामन्जस्य स्थापित रहता है तो हमारे आस–पास का परिवेश स्वच्छ रहता है। परिवेश स्वच्छ रहने से हम स्वस्थ रहते है। हमारे स्वस्थ रहने से हमारी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थितियाँ अनुकूल होती है, जिससे हम हमारे सद्कार्यो के माध्यम से देश के विकास में योगदान देते है। 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।' स्वस्थ शरीर तभी रह सकता है, जब हमारा पर्यावरण स्वच्छ रहेगा।

विश्व का पुरातन इतिहास व सभी धर्म व विचार धाराएँ यह मानती रही है कि स्वच्छ वातावरण किसी भी समुदाय या स्थान विशेष के समग्र विकास के लिए अति आवश्यक है। स्वच्छता, स्वास्थ्य और पर्यावरण का चोली दामन का साथ रहा है।

प्राचीनकाल में तो इनमें परस्पर सामंजस्य स्थापित रहता था लेकिन आज हमारे देश की कटु सच्चाई यह भी है कि स्वच्छता व धर्मपरायणता केवल धार्मिक गतिविधियों व रसोई तक ही सीमित है। स्वच्छता के प्रति जागरूकता के अभाव में हमारी 'शस्य श्यामला धरती' पर जगह–जगह कूड़ा–करकट व गन्दगी के ढेर नजर आने लगे है। अपने आस–पास के वातावरण को साफ व स्वच्छ रखना हमारे व्यवहार में नहीं है। सड़क, रास्ते, पार्क व सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता के प्रति हम चिंतित नहीं है।

भारत में स्वच्छता परिदृश्य अभी भी निराशाजनक है। अधिकांशतः भारतीयों के पास मोबाइल फोन तो है, लेकिन घर में शौचालय नहीं है। यह लोगों की स्वच्छता के प्रति जागरूकता व समाज की मानसिकता को दर्शाता है। गाँधी जी ने किसी भी सभ्य व विकसित मानव समाज के लिए स्वच्छता के उच्च मानदण्ड की आवश्यकता को समझा। अपने पूरे जीवन–काल में उन्होंने निरन्तर, बिना थके स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक किया। वास्तव में स्वच्छता गाँधी जी के लिये बुनियादी व सामाजिक बदलाव की दृष्टि से एक अनिवार्य मुद्दा था।

बहरहाल स्वच्छता का मुद्दा अब मुख्यधारा में शामिल हो गया, जब सरकार ने राष्ट्रीय स्तर पर स्वच्छता अभियान प्रारम्भ किया। यह सच है कि स्वच्छता कार्यक्रम लम्बे समय से सरकारी नीति का एक हिस्सा रहा है, लेकिन पहले यह प्रशासनिक या मीडिया कवरेज दोनों ही स्तरों पर बड़ा अभियान नहीं बन सका। अब सरकार अगले कुछ वर्षो में शहरी अपशिष्ट प्रबंधन, शौचालय निर्माण, स्वास्थ्य व स्वच्छता विषय पर सार्वजनिक शिक्षा के लिये गैर–सरकारी संगठनों, औद्योगिक घरानों व कम्पनी निकाय जैसे निजी क्षेत्रों के साथ सरकारी सहयोग से एक बड़ा कोष खर्च करने के लिए प्रतिबद्ध है। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में उन लोगों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत हैं जिनके कन्धों पर सीवर, शौचालय व नगर–पालिका के स्थानों को दिन–प्रतिदिन स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी है।

ऐसे लाखों सफाईकर्मी है, जो बहुत कम वेतन व अमानवीय परिस्थितियों में काम करते है। सामाजिक रूप से ये सफाइकर्मी समाज के सबसे कमजोर वर्ग से सम्बन्ध रखते है। ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक हैं, जो अपशिष्ट चुनते व जमा करते है। इनमें बहुत अधिक संख्या 14 वर्ष से कम आयु वाले बालकों की है। उन्हें किसी भी तरह की सामाजिक सुरक्षा प्राप्त नहीं है। यह झकझोरने वाली बात है कि भारत में स्वच्छता से जुड़े 90 प्रतिशत सफाइकर्मी विभिन्न प्रकार के संक्रामक रोगों की चपेट में आकर 60 वर्ष पूरा करने से पहले ही मौत के मुँह में समा जाते है।

युगों से चली आ रही अवैज्ञानिक वर्ण व्यवस्था और जाति आधारित जटिल सामाजिक संरचना ने हमें स्वच्छता के महत्वपूर्ण मुद्दे से अलग कर दिया है। स्वच्छता के संदर्भ में सामाजिक भेदभाव व मानवीय सम्मान का प्रश्न सबसे पहले आता है। व्यक्ति के सामाजिक व आर्थिक स्थिति के आधार पर स्वच्छता का स्तर भी अलग–अलग माना जाता है। प्रायः ऐसा माना जाता है कि जिन लोगों को सामाजिक व आर्थिक स्थिति के आधार उच्च दर्जा प्राप्त है वे अधिक गन्दगी नहीं फैलाते, वहीं अभाव ग्रस्त व वंचित लोग गन्दगी फैलाने में अधिक योगदान देते है। हालांकि यह सभी लोगों के साथ सही हो ऐसा जरूरी नहीं है। कुछ गरीब व वंचित परिवारों में भी स्वच्छता का स्तर काफी अधिक देखने को मिलता है, इसके विपरीत अधिक सम्पन्न परिवारों में भी गंदगी के अम्बार देखने को मिलती हैं।

इस बात का गहरा प्रतीकात्मक मूल्य हैं, कि स्वच्छता हेतु चलाये गये स्वच्छ भारत अभियान के केन्द्र में सरकार ने एक प्रेरणा व प्रतिमान के रूप में गाँधी जी को रखा है। प्रतीकात्मक रूप में गाँधी जी की ऐनक सच्चे अर्थों में तभी सम्मानित होगी जब देश में एक सीवर सफाइकर्मी की मेनहोल में या किसी भी कूडा बीनने वाले बच्चे की संक्रामक रोग की चपेट में आकर मौत न हो।

गाँधी जी तभी मुस्करायेंगे, जब केवल दलित ही नहीं बल्कि सभी जातियों के लोग, देश में स्वच्छता के आधुनिक तंत्र में सीवरेज सफाई के लिये अपनी इच्छा से सफाई कर्मचारी का काम करने के लिए आगे आऐंगे। यह तभी सम्भव है जब सफाई के प्रति लोगों की मानसिकता बदलेगी। लोग ये भी समझेंगे कि स्वच्छता के लिए आर्थिक मजबूती की आवश्यकता नहीं हैं, कोई भी व्यक्ति जो स्वच्छता के प्रति जागरूक है वह बिना किसी आर्थिक कठिनाई के स्वच्छ रह सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

सामाजिक असमानता, अस्पृश्यता देश की माथे पर कंलक है। गाँधी जी ने इस कंलक को मिटाने हेतु बुनियादी व क्रान्तिकारी कदम उठाये।

प्रस्तुत पत्र के अध्ययन का उद्देश्य गाँधी जी के स्वच्छता व सामाजिक समानता से सम्बन्धित विचारों से लोगों को अवगत करा कर स्वच्छता के प्रति लोगों की संकीर्ण मानसिकता को दूर करना है।

देश की स्वच्छता का उत्तरदायित्व सिर्फ सफाई–कर्मचारियों, निम्न व दलित वर्ग का ही है। इस संकीर्ण मानसिकता को बदलकर सोच को व्यापक बनाना होगा। स्वच्छ भारत अभियान की सफलता सामूहिक सहभागिता से ही संभव है।

साहित्यावलोकन

अय्यंगार सुदर्शनः– ''गाँधी जी और स्वच्छता'' योजना अक्टूबर 2014

भारत में स्वच्छता परिदृश्य अभी भी निराशा जनक है। गाँधीजी ने स्वच्छता के समाज–शास्त्र को समझा। पारम्परिक तौर पर सदियों से सफाई के काम में लगे लोगों को गरिमा प्रदान करने की कोशिश की। आजादी के बाद से हमने उनके अभियान को योजनाओं में बदल दिया। योजनाओं को लक्ष्यों, ढांचों और संख्याओं तक सीमित कर दिया गया। हमने मौलिक ढांचे और प्रणाली से 'तंत्र' पर तो ध्यान दिया और उसे मजबूत भी किया लेकिन हम 'तत्व' को भूल गये जो व्यक्ति में मूल्य स्थापित करता है।

पिल्लई, के. विजयन :– ''भारत में स्वच्छता और सामाजिक परिवर्तन'' योजना, जनवरी 2015

वर्तमान सरकार ने लगभग 1000 शहरों को साफ करने तथा मैला ढोने को खत्म करने के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरूआत की है। इस कार्यक्रम की सफलता तथा विशेषकर इसका दीर्घायु होना उन सामाजिक– संरचनात्मक शक्तियों के साथ इसके ताल मेल पर निर्भर करता है, जो निम्न स्वच्छता दर की स्थिति को संचालित करती है। निम्न स्वच्छता दर को बहुत सारे आर्थिक तथा सामाजिक मुद्दों के साथ जोड़ दिया गया है। यह कार्यक्रम सफल हो सके, इसके लिए मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता है, जो आधुनिक

सुख–सुविधाएं तथा जन–स्वास्थ्य शिक्षा को लोगों के दरवाजे तक ले जाएं।

''स्वच्छ भारत की चुनौतियाँ'' सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल दिसम्बर 2016

विश्व में कुल 95 करोड़ लोग खुले में शौच करते है, जिनमें से 60 प्रतिशत भारतीय है। 'टू कास्ट ऑफ सैनिटेशन' नाम की रिपोर्ट के अनुसार, शौचालय की सुविधा ना मिलने के कारण विश्व अर्थव्यवस्था को वर्ष 2015 में 14,90,300 करोड़ रूपये का नुकसान हुआ। इस आर्थिक नुकसान का सबसे ज्यादा 77 प्रतिशत बोझ एशिया प्रशांत देशों पर पड़ता है, इसमें भारत को सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।

अय्यर परमेश्वरन :– ''साकार होगा स्वच्छ भारत का सपना'' योजना, अक्टूबर 2017

मिशन की शुरूआत में ग्रामीण स्वच्छता कवरेज 39 प्रतिशत से बढ़कर 68 प्रतिशत के मौजूदा आंकड़े पर पहुँच गया है। 193 जिले व पूरे देश के लगभग 235000 गांवों को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया गया है।

गुप्ता, अशोकः – '' स्वच्छता, स्वास्थ्य और पर्यावरण'' शिक्षक प्रभा, वर्ष–10, अंक–5, जुलाई 2017

स्वच्छता, स्वास्थ्य व पर्यावरण के बीच एक 'अटूट रिश्ता माना गया है। यदि उक्त तीनों घटकों के बीच सामन्जस्य स्थापित रहता हैं, तो हमारा परिवेश स्वच्छ रहता है, हम स्वस्थ रहते है। हमारी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थितियां अनुकूल होती है जिससे हम देश के विकास में योगदान दे सकते है।

संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व स्वास्थ्य संगठन यूनेस्को, यूनिसेफ सहित कई संस्थायें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर, केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, सामाजिक संस्थाएँ स्थानीय स्तर पर स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक प्रयास कर रही है।

निष्कर्ष

हमारा एक कदम स्वच्छता के ओर बढ़ाया गया ना केवल आस–पास के माहौल को साफ बनाएगा, बल्कि हम–आपको और पूरे देश को आर्थिक तौर पर भी संबल बनाएगा व विश्व अर्थव्यवस्था में भारत को विशेष स्थान दिलाएगा। बस जरूरत है, सोच बदलने की व सोच को व्यापक बनाने की। स्वच्छता हमारे स्वयं के लिए समाज के लिए, पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण है, इसके प्रति लोगों को गंभीर होना पड़ेगा। सभी को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। तभी एक स्वच्छ व स्वस्थ भारत का निर्माण सम्भव है।

यदि स्वच्छता देश के प्रत्येक व्यक्ति की आदत बन जाए तो देश की काया पलट ही हो जाएगी, क्योंकि अस्वच्छता के कारण ही आज देश भ्रष्टाचार अनाचार, स्वार्थ, हिंसा, अधर्म और पापाचार की ओर बढ़ता जा रहा है। ऐसे में देश के प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी स्वच्छ रहने व दूसरों को स्वच्छता के प्रति प्रेरित करने में होनी चाहिए। हमारी संस्कृति तो वसुधैव कुटुम्बकम को मानने वाली है। देश का या विश्व का कार्य हमारे परिवार का कार्य है। हमारी मातृभूमि, पृथ्वीमाता, भारत माता को स्वच्छ बनाने का ही कार्य है। आखिर क्यों स्वच्छता हेतु लोगों को प्रोत्साहित करना पड़ रहा है, जबकि यह स्वतः करने वाला कार्य है। समाज के सभी नागरिकों को यह बात भली–भांति समझ लेना होगी, कि हमें भारत को स्वच्छ बनाना है और यह कार्य केवल झाड़ू लगाने मात्र से ही संभव नहीं है। इसके लिए समाज की सामूहिक चेतना में परिवर्तन आना आवश्यक है।

वास्तव में अब समय आ गया है कि हम इस बात को जान और मान लें कि समाज में मात्र एक वर्ग विशेष के ऊपर स्वच्छता का दायित्व नहीं डाला जा सकता। यह कहने से भी काम नहीं चलेगा कि एक वर्ग विशेष का कार्य सफाई करना है और शेष समाज का दायित्व साफ दिखना। यही अमानवीय व्यवस्था और सामंती सोच देश को कहीं की नहीं छोड़ेगी। जाति व्यवस्था पर हमला किए बिना हम एक गरिमापूर्ण समाज और स्वच्छ एवं समृद्ध भारत की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *योजना, जनवरी 2015*
2. *http://swachhbharat.mygov.in/*
3. *Global-development/Reinent_the-toilet challenge*
4. *http://www.who.int/*
5. *http://mdws.gov.in/*
6. *http://archive.india.gov.in*
7. *प्रतियोगिता दर्पण, जनवरी–2017*